Dr. Kumari Kiran
Department of Home Science
H.D. Jain College, Ara.

B.A Part III - Child Psychology
Paper — VI (six)

Mb. No - 9199789792

Topic details — Heredity and Environment
वंशानुक्रमण तथा पर्यावरण

बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों के समस्त विकास के लिए मुख्य रूप से दो कारकों को अत्यधिक जिम्मेदार ठहराया जाता है। ये कारक हैं — वंशानुक्रमण तथा पर्यावरण. भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अलग-अलग प्रकार से इन दोनों कारकों की भूमिका तथा महत्व का वर्णन किया है। कुछ विद्वान व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास के लिए केवल वंशानुक्रमण को ही महत्व देते हैं। और उनका कहना है कि जैसी वंश परम्परा एवं विशेषताएँ होंगी वैसी ही उनकी संतान भी होगी। इस मत के समर्थक विद्वान पर्यावरण को गौण मानते हैं तथा इसके अनुसार व्यक्ति स्वयं अपने अनुकूल पर्यावरण को तैयार कर लेता है। इसके विपरीत विद्वानों का एक अन्य वर्ग व्यक्ति के विकास में पर्यावरण के कार्य भाग को अधिक महत्व देता है। इस मत के समर्थक एक विद्वान का कहना है कि "नवजात शिशु अनिश्चित रूप से लचीला होता है"। इनके अनुसार, "मुझे एक दर्जन बच्चे दे दीजिए, मैं आपकी माँग के अनुसार उनमें से किसी को भी चिकित्सक, वकील, व्यापारी अथवा चोर बना सकता हूँ। मनुष्य कुछ नहीं, वह पर्यावरण का दास है, उसकी उपज है।" इस मत के अनुसार स्पष्ट है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में उसके वंश एवं वंश परम्परा का कोई महत्व नहीं है। केवल पर्यावरण ही उसके व्यक्तित्व का निर्धारण करता है।

वंशानुक्रमण का अर्थ एवं परिभाषा

व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास को प्रभावित करने वाले एक मुख्य कारक को वंशानुक्रमण कहा जाता है। वंशानुक्रमण शब्द का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द हेरीडिटी (Heredity) है। यह शब्द वास्तव में लैटिन शब्द हेरीडिटास (Hereditas) से बना है। लैटिन भाषा में इस शब्द का आशय उस पूँजी से होता है जो बच्चों को विरासत के रूप में प्राप्त होती है। यहाँ वंशानुक्रमण का मतलब माता-पिता के उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होने वाले शारीरिक, बौद्धिक तथा अन्य व्यक्तित्व में पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित होने वाले गुणों से है। इस मान्यता के अनुसार संतान के विभिन्न गुण एवं व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण अपने माता-पिता के समान होते हैं। जैसे :— गोरे माता-पिता के संतान भी गोरी होती है। लम्बे कद के माता-पिता के संतान भी लम्बी होती है। इस तथ्य के अनुसार प्रजाति-गत विशेषताएँ सदैव बनी रहती हैं।

वंशानुक्रमण के कारण ही प्रत्येक मनुष्य की संतान मनुष्य ही होती है। कभी भी कोई बिल्ली कुत्ते को जन्म नहीं देती। वंशानुक्रमण को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है जो इस प्रकार है

(1) वोकेन की परिभाषा — "दो पीढ़ियों को जोड़ने वाली श्रृंखला को हम वंशानुक्रमण कहते हैं।"

इसके कहने का तात्पर्य है कि हम सभी कहीं न कहीं पूर्वजों एवं वंशजों में पर्याप्त समानता होती है यह समानता वास्तव में वंशानुक्रमण के ही परिणाम-स्वरूप होती है।

(2) जिस्बर्ट ने वंशानुक्रमण को परिभाषित करते हुए कहा कि "वंशानुक्रमण माता-पिता द्वारा संतानों के जैवकीय अथवा मनो: वैज्ञानिक विशेषताओं के हस्तान्तरण को सूचित करता है"

(3) पीटरसन की परिभाषा — "एक व्यक्ति अपने माता-पिता द्वारा पूर्वजों में अंश से जो कुछ प्राप्त करता है, वंशानुक्रमण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है॥"

(4) रूथ बेनेडिक्स की परिभाषा — "माता-पिता से संतान को हस्तान्तरित होने वाले गुणों को वंशानुक्रमण कहते हैं।"

उपरोक्त वर्णित परिभाषाओं के द्वारा वंशानुक्रमण का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रजनन की प्रक्रिया के माध्यम से संचारित होने वाले जैवकीय एवं अन्य गुणों को वंशानुक्रमण कहा जाता है। वंशानुक्रमण के परिणाम स्वरूप विभिन्न पीढ़ियों में समानता होती है।

पर्यावरण का अर्थ एवं परिभाषा

पर्यावरण को अंग्रेजी में Environment कहते हैं। हिन्दी में दो शब्दों को मिलाकर बना है। परि + आवरण। 'परि' शब्द का अर्थ है — चारों ओर तथा 'आवरण' शब्द का अर्थ है — ढके हुए। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ हुआ — चारों ओर से ढके हुए या घेरे हुए इस स्थिति में मैं व्यक्ति घिरा रहता है। इस प्रकार का पर्यावरण वह सब कुछ कहलायेगा जो व्यक्ति को घेरे रहता है। पर्यावरण का व्यक्ति के जीवन से स्पष्ट है कि पर्यावरण एक विस्तृत धारणा है। पर्यावरण का व्यक्ति के जन्म लेने से घनिष्ठ संबंध होता है। कुछ विद्वानों के अनुसार व्यक्ति के जन्म लेने से पूर्व पर्यावरण का प्रभाव प्रारंभ हो जाता है तथा जीवन भर चलता है। इसी तथ्य को मैकाइवर तथा पेज ने इन शब्दों में स्पष्ट करने का प्रयास किया है, "स्वयं प्राणी जीवन संरचना जीवन और अतीत पर्यावरण की उपज है। पर्यावरण जीवन के प्रारंभ से ही विद्यमान है, यह एक भी यहाँ तक की उत्पादन कोष्ठों में भी विद्यमान रहता है"। पर्यावरण के वास्तविक को अर्थ को जानने के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रतिपादित परिभाषाओं को भी प्रस्तुत करना अनिवार्य है।

जिस्बर्ट की परिभाषा — "पर्यावरण वह है जो एक वस्तु के चारों ओर से घेरे है तथा उस पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है।"

रॉस की परिभाषा — रॉस ने पर्यावरण को बाहरी शक्ति के रूप में प्रतिपादित किया है। उनके ही शब्दों में " पर्यावरण कोई भी बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।

मैकाइवर तथा पेज की परिभाषा — मैकाइवर तथा पेज ने पर्यावरण की विस्तृत व्याख्या की है। उनके अनुसार मानव प्राणी का सम्पूर्ण पर्यावरण — (I) मनुष्य द्वारा विभिन्न रूपों में संशोधित एक बाह्य पर्यावरण जिसका जिसका विस्तारतर संशोधन आधुनिक सभ्यता के क्षेत्र में से होता है, किन्तु जिससे सभी स्थिति में एक अप्रतिरोध्य तथा शारीरिक अनुकूलन की आवश्यकता रहता है, और (II) एक आन्तरिक अथवा सामाजिक पर्यावरण जिसके साथ सावधानी पूर्वक कार्य और अभ्यास द्वारा मनुष्य अपना समायोजन करता है।

उपरोक्त वर्णित परिभाषाओं द्वारा पर्यावरण का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। वास्तव में पर्यावरण एक विस्तृत अवधारणा है। "पर्यावरण जीवन के प्रत्येक पक्ष में अन्तर्निहित है। यह मानव शक्तियों को निर्देशित या विमुक्त, उत्साहित या हतोत्साहित करता है। यह उसकी वाणी को मोड़ देता है, यह उसके रूप को सूक्ष्म रूप से परिवर्तित करता है — केवल इतना ही नहीं, बल्कि इससे भी अधिक यह उसके अन्दर निवास करता है। यह उसके मस्तिष्क की जीव - पेशियों में अंकित है। यह उसके रक्त में भी कार्य करता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पर्यावरण का प्रभाव — केवल मनुष्यों पर ही नहीं विश्व की सभी जड़ - चेतन वस्तुओं पर भी — पड़ता है।

//